श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ७

डिसेंबर 2023

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. वन में घूमने से और रहने से वे .... कहलाते है।
२. अनादि काल से विषय वासना के .... आत्मा में पडे हुए है।
३. .... याने जीव के उत्पन्न होने का स्थान।
४. वासुदेव की माताएं चौदह सपनों में से .... सपने देखकर जागती है।
५. अभयदान से बडा धर्म इस.......................... पर नहीं है।
६. जिसे मोक्षसाधना करनी है, उसके लिये मार्ग पाना और .... प्राप्त करना अत्यंत कठीन है।
७. अनादि से आ रहे कर्म के प्रवाह अटकाने का कार्य...................... है।
८. धर्म के अधिकारी बनने के लिये..................... चाहिए।
९. हिंसा से सतत जीव के परिणाम........................ बनते जाते है।
१०. स्वयोग्य पर्याप्ति पुरी करने के बाद वही देव..................... कहलाते है।
११. माता.................. ने रो रो कर आंखो का तेज गंवाया।
१२. ढाईद्वीप के बाहर.................... चक्र के विमान स्थिर होते है।
१३. मैं समता का लाभरूप...................... करता हुं।
१४. .... से कुछ भी प्राप्त नहीं होता, उनकी सहायता से मोक्षप्राप्ति हो ही नहीं सकती।
१५. यथाख्यात चारित्र जीव को निश्चित मोक्षनगरी में पहुंचाकर................... स्थान दिलाता है।
१६. धर्म दुसरा कुछ भी नहीं सच्ची दया का .... आचरण है।
१७. ज्ञान का फल कर्म से अटकने रूप........................ ही है।
१८. पत्थर दिल मनुष्य की .... कर सकता है।
१९. इन्द्र अरिहंत परमात्माओं को नमस्कार करने के लिए .... कहता है।
२०. इच्छाओं का निरोध - इच्छाओं को रोकना वह.................है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. सौधर्मेन्द्र की सभा का नाम क्या है ?
२. शुद्ध साध्य उपयोग में एकत्व भाव से स्थिर रहना वह कौनसी दया है ?
३. प्रभु के दीक्षा समय प्रभुको तीर्थ की स्थापना की विनंती कौनसे देव करते है ?
४. अमरचंद्र राजाकी नगरी कौनसी ?
५. शौच याने क्या ?
६. देवानंदा प्रथम रुप स्वप्न में किसको देखा ?
७. यश और सुयश के गरू कौन थे ?
८. धर्म का मूल कौन ?
९. देवो का राजा कौन कहलाता है ?
१०. महावीर प्रभुका जन्म कौनसे नक्षत्र में हुआ ?
११. सब सद्‌गुणों की माता कौन है ?
१२. सम याने समता तो आय याने क्या ?
१३. भवनपति देवो का रहने का स्थान कौनसा ?
१४. अठारह पाप स्थानक में तीसरा पापस्थानक कौनसा है ?
१५. "धर्म का दूत आया है।" ऐसा सुरेन्द्रदत्त को किसने कहा ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. मृषावाद २) जोइसिया ३) चरिऊण ४) य ५) सावज्ज ६) साहगा ७) बोधव्वे ८) ततो ९) धम्मस्स १०) अेगया ११) सामाइ
१२. सुहुमं १३) अहख्खायं १४) बंभ १५) आसव १६) पयत्तेणं १७) जइ १८) पढम १९) काअेणं २०) बीऊं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) विमान	१) स्वरवेधी	६) मार्गदर्शन	६) वतंसक
२) प्राशुक	२) चरमतीर्थ पति	७) गुरूदेव	७) सद्गुरु
३) पाप स्थानक	३) सुघोष	८) महावीर	८) कलंक
४) यशोधरा	४) आहार	९) गुणधर	९) क्षमा
५) विपाक	५) अग्नि	१०) लकडें में	१०) चरित्र

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. साधु का संयम कितने प्रकार का है ?
२. साधारण वनस्पतिकाय कितनी लाख है ?
३. परमाधामी देव के प्रकार कितने ?
४. यतिधर्म के प्रकार बताओ ?
५. अधोलोक में नारकी कितनी है ?
६. अनुचर देव कितने है ?
७. अठारह पाप स्थानक के कितने भांगे से दोष लगते है ?
८. स्वप्नशास्त्र में कितने स्वप्न मध्यम कहे गये है ?
९. परिहार कल्प कितने महिने में पूर्ण होता है ?
१०. समभूतला से कितने योजन उपर चंद्र का विमान है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. चंडाल जाति के देव वाण व्यंतर होते है ।
२. संवर तत्व का अज्ञान आत्मा को विकास करने से अटकाता है ।
३. जयणा के साथ जीवरक्षा पूर्वक प्रवृति वह परदया है ।
४. इच्छाकारेण संदिसह भगवन अठारह पापस्थानक खमाऊंजी ।
५. आज बाप बेटा साथ में शराब पीते है ।
६. यशोधरा माता के अत्यंत आग्रह करने से राजा ने मिट्ठी के मुर्गे का मांस खाया ।
७. त्रिलोचन नामक पंडित जैन सिद्धांत में कुशल था ।
८. मांडलिक राजा की माता चार महास्वप्न देखती है ।
९. रत्न अल्प है, कंकड बहुत है ।
१०. लज्जालु श्रावक का सातवाँ गुण है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. हीरा मुख से ना कहे लाख टका मेरा मोल ।
२. प्रभातकाल में नित्यक्रम कर राजा राजसभा मे विराजमान हुआ ।
३. जीवों के उत्पन्न होने के स्थान तो इससे भी ज्यादा है ।
४. उर्ध्वलोक में देवलोक है ।
५. तृष्णा रखना ।
६. मेरे दुःखो का कोई पार नहीं है ।
७. संसार में जन्म दुखमय है ।
८. क्यों हस रही हो ।
९. इन्द्रो को इस तरह बरतने का आचार है ।
१०. कब मिलेगी हमे यह शक्ति ?

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. महावीर प्रभु के जन्म समय पर सृष्टि की झलक । २) करेमि भंते सूत्र का अर्थ ३) लज्जालु
४. तिर्यंग जृंभक देव ५) एकत्व और अन्यत्व भावना ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अॅकेडमी, श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालीसगांव - ४२४ १०१. जि. जलगांव, मो. ९०२८२४२४८४
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com